

# श्रीमद्भागवतम्

स्कन्ध 3



SGD

श्रीमद् भागवत पुराण

अध्याय 5

मैत्रेय से विदुर की वार्ता

श्रीलगुरुदेव

श्रीश्रीगुरु- गौरांगौ जयतः

**श्लोक 1:** शुकदेव गोरस्वामी ने कहा : इस तरह कुरुवंशियों में सर्वश्रेष्ठ विदुर, जो कि भगवद्भक्ति में परिपूर्ण थे, स्वर्ग लोक की नदी गंगा के उद्गम (हरद्वार) पहुँचे जहाँ विश्व के अगाध विद्वान महामुनि मैत्रेय आसीन थे। मद्रता से ओत-प्रोत में पूर्ण तथा अध्यात्म में तुष्ट विदुर ने उनसे पूछा।

**श्लोक 2:** विदुर ने कहा : हे महर्षि, इस संसार का हर व्यक्ति सुख

प्राप्त करने के लिए सकाम कर्मों में प्रवृत्त होता है, किन्तु उसे न तो तृप्ति मिलती है न ही उसके दुःख में कोई कमी आती है। विपरीत इसके ऐसे कार्यों से उसके दुःख में वृद्धि होती है। इसलिए कृपा करके हमें इसके विषय में हमारा मार्गदर्शन करें कि असली सुख के लिए कोई कैसे रहे?

**श्लोक 3:** हे प्रभु, महान् परोपकारी आत्माएँ पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् की ओर से पृथ्वी पर उन पतित आत्माओं पर अनुकंपा दिखाने के लिए विचरण करती है, जो भगवान्

की अधीनता के विचार मात्र से ही  
विमुख रहते हैं।

**श्लोक 4:** इसलिए, हे महर्षि,  
आप मुझे पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् की  
दिव्य भक्ति के विषय में उपदेश दें  
जिससे हर एक के हृदय में स्थित  
भगवान् भीतर से परम सत्य विषयक  
वह ज्ञान प्रदान करने के लिए प्रसन्न  
हों जो कि प्राचीन वैदिक सिद्धान्तों के  
रूप में उन लोगों को ही प्रदान किया  
जाता है, जो भक्तियोग द्वारा शुद्ध हो  
चुके हैं।

**श्लोक 5:** हे महर्षि, कृपा करके बतलाएँ कि पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् जो तीनों लोकों के इच्छारहित स्वतंत्र स्वामी तथा समस्त शक्तियों के नियन्ता हैं, किस तरह अवतारों को स्वीकार करते हैं और किस तरह विराट जगत को उत्पन्न करते हैं, जिसके परिपालन के लिए नियामक सिद्धान्त पूर्ण रूप से व्यवस्थित हैं।

**श्लोक 6:** वे आकाश के रूप में फैले अपने ही हृदय में लेट जाते हैं और उस आकाश में सम्पूर्ण सृष्टि को रखकर वे अपना विस्तार अनेक जीवों

में करते हैं, जो विभिन्न योनियों के रूप में प्रकट होते हैं। उन्हें अपने निर्वाह के लिए कोई प्रयास नहीं करना पड़ता क्योंकि वे समस्त यौगिक शक्तियों के स्वामी और प्रत्येक वस्तु के मालिक हैं। इस प्रकार वे जीवों से भिन्न हैं।

**श्लोक 7:** आप द्विजों, गौवों तथा देवताओं के कल्याण हेतु भगवान् के विभिन्न अवतारों के शुभ लक्षणों के विषय में भी वर्णन करें। यद्यपि हम निरन्तर उनके दिव्य कार्यकलापों के

विषय में सुनते हैं, किन्तु हमारे मन कभी भी पूर्णतया तुष्ट नहीं हो पाते।

**श्लोक 8:** समस्त राजाओं के परम राजा ने विभिन्न लोकों की तथा आवास स्थलों की सृष्टि की जहाँ प्रकृति के गुणों और कर्म के अनुसार सारे जीव स्थित है और उन्होंने उनके विभिन्न राजाओं तथा शासकों का भी सृजन किया।

**श्लोक 9:** हे ब्राह्मणश्रेष्ठ, आप यह भी बतलाएँ कि ब्रह्माण्ड के स्रष्टा तथा आत्मनिर्भर प्रभु नारायण ने किस तरह विभिन्न जीवों के स्वभावों,



कार्यों, रूपों, लक्षणों तथा नामों की पृथक्-पृथक् रचना की है।

**श्लोक 10:** हे प्रभु, मैं व्यासदेव के मुख से मानव समाज के इन उच्चतर तथा निम्नतर पदों के विषय में बारम्बार सुन चुका हूँ और मैं इन कम महत्व वाले विषयों तथा उनके सुखों से पूर्णतया तृप्त हूँ। पर वे विषय बिना कृष्ण विषयक कथाओं के अमृत से मुझे तुष्ट नहीं कर सके।

**श्लोक 11:** जिनके चरणकमल समस्त तीर्थों के सार रूप हैं तथा जिनकी आराधना महर्षियों तथा भक्तों

द्वारा की जाती है, ऐसे भगवान् के विषय में पर्याप्त श्रवण किये बिना मानव समाज में ऐसा कौन होगा जो तुष्ट होता हो? मनुष्य के कानों के छेदों में ऐसी कथाएँ प्रविष्ट होकर उसके पारिवारिक मोह के बन्धन को काट देती हैं।

**श्लोक 12:** आपके मित्र महर्षि कृष्णद्वैपायन व्यास पहले ही अपने महान् ग्रन्थ महाभारत में भगवान् के दिव्य गुणों का वर्णन कर चुके हैं। किन्तु इसका सारा उद्देश्य सामान्य जन का ध्यान लौकिक कथाओं को

सुनने के प्रति उनके प्रबल आकर्षण के माध्यम से कृष्णकथा (भगवद्गीता) की ओर आकृष्ट करना है।

**श्लोक 13:** जो व्यक्ति ऐसी कथाओं का निरन्तर श्रवण करते रहने के लिए आतुर रहता है, उसके लिए कृष्णकथा क्रमशः अन्य सभी बातों के प्रति उसकी उदासीनता को बढ़ा देती है। वह भक्त जिसने दिव्य आनन्द प्राप्त कर लिया हो उसके द्वारा भगवान् के चरणकमलों का ऐसा निरन्तर स्मरण तुरन्त ही उसके सारे कष्टों को दूर कर देता है।

**श्लोक 14:** हे मुनि, जो व्यक्ति अपने पाप कर्मों के कारण दिव्य कथा-प्रसंगों से विमुख रहते हैं और फलस्वरूप महाभारत (भगवद्गीता) के उद्देश्य से वंचित रह जाते हैं, वे दयनीय द्वारा भी दया के पात्र होते हैं। मुझे भी उन पर तरस आती है, क्योंकि मैं देख रहा हूँ कि किस तरह नित्यकाल द्वारा उनकी आयु नष्ट की जा रही है। वे दार्शनिक चिन्तन, जीवन के सैद्धान्तिक चरम लक्ष्यों तथा विभिन्न कर्मकाण्डों की विधियों को प्रस्तुत करने में स्वयं को लगाये रहते हैं।

**श्लोक 15:** हे मैत्रेय, हे दुखियारों  
के मित्र, एकमात्र भगवान् की महिमा  
सारे जगत के लोगों का कल्याण करने  
वाली है। अतएव जिस तरह  
मधुमक्खियाँ फूलों से मधु एकत्र  
करती हैं, उसी तरह कृपया समस्त  
कथाओं के सार—कृष्णकथा—का  
वर्णन कीजिये।

**श्लोक 16:** कृपया उन परम  
नियन्ता भगवान् के समस्त  
अतिमानवीय दिव्य कर्मों का कीर्तन  
करें जिन्होंने विराट् सृष्टि के प्राकट्य  
तथा पालन के लिए समस्त शक्ति से

समन्वित होकर अवतार लेना  
स्वीकार किया।

**श्लोक 17:** शुकदेव गोरुवामी ने  
कहा : विदुर का अत्यधिक सम्मान  
करने के बाद विदुर के अनुरोध पर  
समस्त लोगों के महानतम कल्याण  
हेतु महर्षि मैत्रेय मुनि बोले।

**श्लोक 18:** श्रीमैत्रेय ने कहा : हे  
विदुर, तुम्हारी जय हो। तुमने मुझसे  
सबसे अच्छी बात पूछी है। इस तरह  
तुमने संसार पर तथा मुझ पर अपनी  
कृपा प्रदर्शित की है, क्योंकि तुम्हारा

मन सदैव ब्रह्म के विचारों में लीन रहता है।

**श्लोक 19:** हे विदुर, यह तनिक भी आश्चर्यप्रद नहीं है कि तुमने अनन्य भाव से भगवान् को इस तरह स्वीकार कर लिया है, क्योंकि तुम व्यासदेव के वीर्य से उत्पन्न हो।

**श्लोक 20:** मैं जानता हूँ कि तुम माण्डव्य मुनि के शाप के कारण विदुर बने हो और इसके पूर्व तुम जीवों की मृत्यु के पश्चात उनके महान् नियंत्रक राजा यमराज थे। तुम सत्यवती के पुत्र

व्यासदेव द्वारा उसके भाई की रखैल पत्नी से उत्पन्न हुए थे।

**श्लोक 21:** आप भगवान् के नित्यसंगियों में से एक हैं जिनके लिए भगवान् अपने धाम वापस जाते समय मेरे पास उपदेश छोड़ गये हैं।

**श्लोक 22:** अतएव मैं आपसे उन लीलाओं का वर्णन करूँगा जिनके द्वारा भगवान् विराट जगत के क्रमबद्ध सृजन, भरण-पोषण तथा संहार के लिए अपनी दिव्य शक्ति का विस्तार करते हैं।



**श्लोक 23:** समस्त जीवों के स्वामी, भगवान् सृष्टि के पूर्व अद्वय रूप में विद्यमान थे। केवल उनकी इच्छा से ही यह सृष्टि सम्भव होती है और सारी वस्तुएँ पुनः उनमें लीन हो जाती हैं। इस परम पुरुष को विभिन्न नामों से उपलक्षित किया जाता है।

**श्लोक 24:** हर वस्तु के निर्विवाद स्वामी भगवान् ही एकमात्र द्रष्टा थे। उस समय विराट जगत का अस्तित्व न था, अतः अपने स्वांशों तथा भिन्नांशों के बिना वे अपने को अपूर्ण अनुभव कर रहे थे। तब भौतिक

शक्ति सुसुप्त थी जबकि अन्तरंगा शक्ति व्यक्त थी।

**श्लोक 25:** भगवान् द्रष्टा हैं और बहिरंगा शक्ति, जो दृष्टिगोचर है, विराट जगत में कार्य तथा कारण दोनों रूप में कार्य करती है। हे महाभाग विदुर, यह बहिरंगा शक्ति माया कहलाती है और केवल इसी के माध्यम से सम्पूर्ण भौतिक जगत सम्भव होता है।

**श्लोक 26:** अपने स्वांश दिव्य पुरुष अवतार के रूप में परम पुरुष प्रकृति के तीन गुणों में बीज संस्थापित करता है और इस तरह

नित्य काल के प्रभाव से सारे जीव प्रकट होते हैं।

**श्लोक 27:** तत्पश्चात् नित्यकाल की अन्तःक्रियाओं से प्रभावित पदार्थ का परम सार, जो कि महत् तत्त्व कहलाता है, प्रकट हुआ और इस महत् तत्त्व में शुद्ध सत्त्व अर्थात् भगवान् ने अपने शरीर से ब्रह्माण्ड अभिव्यक्ति के बीज बोये।

**श्लोक 28:** तत्पश्चात् महत् तत्त्व अनेक भिन्न-भिन्न भावी जीवों के आगार रूपों में विभेदित हो गया। यह महत् तत्त्व मुख्यतया तमोगुणी होता है

और यह मिथ्या अहंकार को जन्म देता है। यह भगवान् का स्वांश है, जो सर्जनात्मक सिद्धान्तों की पूर्ण चेतना तथा फलनकाल से युक्त होता है।

**श्लोक 29:** महत् तत्त्व या महान् कारण रूप सत्य मिथ्या अहंकार में परिणत होता है, जो तीन अवस्थाओं में—कारण, कार्य तथा कर्ता के रूप में—प्रकट होता है। ऐसे सारे कार्य मानसिक धरातल पर होते हैं और वे भौतिक तत्त्वों, स्थूल इन्द्रियों तथा मानसिक चिन्तन पर आधारित होते हैं। मिथ्या अहंकार तीन विभिन्न

गुणों—सतो, रजो तथा तमो—में प्रदर्शित होता है।

**श्लोक 30:** मिथ्या अहंकार सतोगुण से अन्तःक्रिया करके मन में रूपान्तरित हो जाता है। सारे देवता भी जो घटनाप्रधान जगत को नियंत्रित करते हैं, उसी सिद्धान्त (तत्त्व), अर्थात् मिथ्या अहंकार तथा सतोगुण की अन्तःक्रिया के परिणाम हैं।

**श्लोक 31:** इन्द्रियाँ निश्चय ही मिथ्या अहंकारजन्य रजोगुण की परिणाम हैं, अतएव दार्शनिक

चिन्तनपरक ज्ञान तथा सकाम कर्म  
रजोगुण के प्रधान उत्पाद हैं।

**श्लोक 32:** आकाश ध्वनि का  
परिणाम है और ध्वनि अहंकारात्मक  
काम का रूपान्तर (विकार) है। दूसरे  
शब्दों में आकाश परमात्मा का  
प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व है।

**श्लोक 33:** तत्पश्चात् भगवान् ने  
आकाश पर नित्यकाल तथा बहिरंगा  
शक्ति से अंशतः मिश्रित दृष्टिपात  
किया और इस तरह स्पर्श की  
अनुभूति विकसित हुई जिससे  
आकाश में वायु उत्पन्न हुई।

**श्लोक 34:** तत्पश्चात् अतीव  
शक्तिशाली वायु ने आकाश से  
अन्तःक्रिया करके इन्द्रिय अनुभूति  
(तन्मात्रा) का रूप उत्पन्न किया और  
रूप की अनुभूति बिजली में  
रूपान्तरित हो गई जो संसार को  
देखने के लिए प्रकाश है।

**श्लोक 35:** जब वायु में बिजली  
की क्रिया हुई और उस पर ब्रह्म ने  
दृष्टिपात किया उस समय नित्यकाल  
तथा बहिरंगा शक्ति के मिश्रण से जल  
तथा स्वाद की उत्पत्ति हुई।

**श्लोक 36:** तत्पश्चात् बिजली से  
उत्पन्न जल पर भगवान् ने दृष्टिपात  
किया और फिर उसमें नित्यकाल  
तथा बहिरंगा शक्ति का मिश्रण हुआ।  
इस तरह वह पृथ्वी में रूपान्तरित  
हुआ जो मुख्यतः गन्ध के गुण से युक्त  
है।

**श्लोक 37:** हे भद्र पुरुष,  
आकाश से लेकर पृथ्वी तक के सारे  
भौतिक तत्वों में जितने सारे निम्न  
तथा श्रेष्ठ गुण पाये जाते हैं, वे भगवान्  
के दृष्टिपात के अन्तिम स्पर्श के  
कारण होते हैं।



**श्लोक 38:** उपर्युक्त समस्त भौतिक तत्त्वों के नियंत्रक देव भगवान् विष्णु के शक्त्याविष्ट अंश हैं। वे बहिरंगा शक्ति के अन्तर्गत नित्यकाल द्वारा देह धारण करते हैं और वे भगवान् के अंश हैं। चूँकि उन्हें ब्रह्माण्डीय दायित्वों के विभिन्न कार्य सौंपे गये थे और चूँकि वे उन्हें सम्पन्न करने में असमर्थ थे, अतएव उन्होंने भगवान् की मनोहारी स्तुतियाँ निम्नलिखित प्रकार से कीं।

**श्लोक 39:** देवताओं ने कहा : हे प्रभु, आपके चरणकमल शरणागतों के

लिए छाते के समान हैं, जो संसार के समस्त कष्टों से उनकी रक्षा करते हैं। सारे मुनिगण उस आश्रय के अन्तर्गत समस्त भौतिक कष्टों को निकाल फेंकते हैं। अतएव हम आपके चरणकमलों को सादर नमस्कार करते हैं।

**श्लोक 40:** हे पिता, हे प्रभु, हे भगवान्, इस भौतिक संसार में जीवों को कभी कोई सुख प्राप्त नहीं हो सकता, क्योंकि वे तीन प्रकार के कष्टों से अभिभूत रहते हैं। अतएव वे आपके उन चरणकमलों की छाया की शरण

ग्रहण करते हैं, जो ज्ञान से पूर्ण है और इस लिए हम भी उन्हीं की शरण लेते हैं।

**श्लोक 41:** भगवान् के चरणकमल स्वयं ही समस्त तीर्थस्थलों के आश्रय हैं। निर्मल मनवाले महर्षिगण वेदों रूपी पंखों के सहारे उड़कर सदैव आपके कमल सदृश मुख रूपी घोंसले की खोज करते हैं। उनमें से कुछ सर्वश्रेष्ठ नदी (गंगा) में शरण लेकर पद-पद पर आपके चरणकमलों की शरण ग्रहण

करते हैं, जो सारे पापफलों से मनुष्य का उद्धार कर सकते हैं।

**श्लोक 42:** आपके चरणकमलों के विषय में केवल उत्सुकता तथा भक्ति पूर्वक श्रवण करने से तथा उनके विषय में हृदय में ध्यान करने से मनुष्य तुरन्त ही ज्ञान से प्रकाशित और वैराग्य के बल पर शान्त हो जाता है। अतएव हमें आपके चरणकमल रूपी पुण्यालय की शरण ग्रहण करनी चाहिए।

**श्लोक 43:** हे प्रभु, आप विराट जगत के सृजन, पालन तथा संहार के

लिए अवतरित होते हैं इसलिए हम सभी आपके चरणकमलों की शरण ग्रहण करते हैं, क्योंकि ये चरण आपके भक्तों को सदैव स्मृति तथा साहस प्रदान करने वाले हैं।

**श्लोक 44:** हे प्रभु, जो लोग नश्वर शरीर तथा बन्धु-बाँधवों के प्रति अवांछित उत्सुकता के द्वारा पाशबद्ध हैं और जो लोग “मेरा” तथा “मैं” के विचारों से बँधे हुए हैं, वे आपके चरणकमलों का दर्शन नहीं कर पाते यद्यपि आपके चरणकमल उनके अपने ही शरीरों में स्थित होते हैं।

किन्तु हम आपके चरणकमलों की शरण ग्रहण करें।

**श्लोक 45:** हे महान् परमेश्वर, वे अपराधी व्यक्ति, जिनकी अन्तःदृष्टि बाह्य भौतिकतावादी कार्यकलापों से अत्यधिक प्रभावित हो चुकी होती है वे आपके चरणकमलों का दर्शन नहीं कर सकते, किन्तु आपके शुद्ध भक्त दर्शन कर पाते हैं, क्योंकि उनका एकमात्र उद्देश्य आपके कार्यकलापों का दिव्य भाव से आस्वादन करना है।

**श्लोक 46:** हे प्रभु, जो लोग अपनी गम्भीर मनोवृत्ति के कारण

प्रबुद्ध भक्ति-मय सेवा की अवस्था प्राप्त करते हैं, वे वैराग्य तथा ज्ञान के संपूर्ण अर्थ को समझ लेते हैं और आपकी कथाओं के अमृत को पीकर ही आध्यात्मिक आकाश में वैकुण्ठलोक को प्राप्त करते हैं।

**श्लोक 47:** अन्य लोग भी जो कि दिव्य आत्म-साक्षात्कार द्वारा शान्त हो जाते हैं तथा जिन्होंने प्रबल शक्ति एवं ज्ञान के द्वारा प्रकृति के गुणों पर विजय पा ली है, आप में प्रवेश करते हैं, किन्तु उन्हें काफी कष्ट उठाना पड़ता है, जबकि भक्त केवल भक्ति-

मय सेवा सम्पन्न करता है और उसे  
ऐसा कोई कष्ट नहीं होता।

**श्लोक 48:** हे आदि पुरुष,  
इसलिए हम एकमात्र आपके हैं। यद्यपि  
हम आपके द्वारा उत्पन्न प्राणी हैं,  
किन्तु हम प्रकृति के तीन गुणों के  
प्रभाव के अन्तर्गत एक के बाद एक  
जन्म लेते हैं, इसीलिए हम अपने कर्म  
में पृथक्-पृथक् होते हैं। अतएव सृष्टि  
के बाद हम आपके दिव्य आनन्द के  
हेतु सम्मिलित रूप में कार्य नहीं कर  
सके।



**श्लोक 49:** हे अजन्मा, आप हमें वे मार्ग तथा साधन बतायें जिनके द्वारा हम आपको समस्त भोग्य अन्न तथा वस्तुएँ अर्पित कर सकें जिससे हम तथा इस जगत के अन्य समस्त जीव बिना किसी उत्पात के अपना पालन-पोषण कर सकें तथा आपके लिए और अपने लिए आवश्यक वस्तुओं का संग्रह कर सकें।

**श्लोक 50:** आप समस्त देवताओं तथा उनकी विभिन्न कोटियों के आदि साकार संस्थापक हैं फिर भी आप सबसे प्राचीन हैं और

अपरिवर्तित रहते हैं। हे प्रभु, आपका न तो कोई उद्गम है, न ही कोई आपसे श्रेष्ठ है। आपने समस्त जीव रूपी वीर्य द्वारा बहिरंगा शक्ति को गर्भित किया है, फिर भी आप स्वयं अजन्मा हैं।

**श्लोक 51:** हे परम प्रभु, महत्-तत्त्व से प्रारम्भ में उत्पन्न हुए हम सबों को अपना कृपापूर्ण निर्देश दें कि हम किस तरह से कर्म करें। कृपया हमें अपना पूर्ण ज्ञान तथा शक्ति प्रदान करें जिससे हम परवर्ती सृष्टि के विभिन्न विभागों में आपकी सेवा कर सकें।

\* \* \* \* \*

श्रीलगुरुदेव